समाजशास्त्र

Date: / /
Page:

समाजशास्त्र का शाब्दिक अर्थ :-

ऑगस्त कॉम्ट वह प्रथम विद्वान थे जिन्होंने समाज का अध्ययन करने वाले विज्ञान को आरंभ में 'सोशल फिजिक्स' के नाम से सम्बोधित किया। बाद में सन् 1838 में इस विज्ञान को कॉम्ट ने 'Sociology' नाम दिया। यही कारण है कि कॉम्ट को 'समाजशास्त्र का जनक' कहा जाता है।

↳ शाब्दिक रूप से 'Sociology' शब्द दो विभिन्न स्थानों के शब्द से मिलकर बना है :-

* प्रथम शब्द 'Socius' है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है।

* द्वितीय शब्द 'Logus' है जो ग्रीक भाषा से लिया गया है।

↳ इन दोनों शब्दों अर्थ क्रमश : समाज (Socius) तथा शास्त्र या ज्ञान (Logus) है।

समाजशास्त्र की परिभाषाएँ :-

अध्ययन की सरलता के लिए समाजशास्त्र की परिभाषाओं को प्रमुख चार भागों में विभाजित करके स्पष्ट किया गया है :

1. समाजशास्त्र समाज का अध्ययन
2. समाजशास्त्र - सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन
3. समाजशास्त्र - सामाजिक अन्तक्रियाओं का अध्ययन

Date: / /
Page:

4: समाजशास्त्र - समूहों का अध्ययन

* वार्ड के मतानुसार :- "समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

* मैकाइवर व पेज के अनुसार :- "समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के 'विषय' में है, सम्बन्धों के इसी जाल को समाज कहा जाता है।"

* गिलिन और गिलिन के अनुसार :- "व्यक्तियों के एक-दूसरे के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली 'अन्तक्रियाओं' के अध्ययन को ही समाजशास्त्र कहा जा सकता है।"

* फेयरचाइल्ड के अनुसार :- 'समाजशास्त्र मानव-समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों से उत्पन्न होने वाले तथ्यों का वैज्ञानिक अध्ययन है। वह व्यक्ति और मानवीय पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन है।"

Date : / /
Page:

इन सभी परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष दिया जाता है कि — समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो

- मानव : एक सामाजिक प्राणी के रूप में
- समाज : सम्बन्धों की व्यवस्था
- सामाजिक समूह : अभियोजन की प्रक्रिया के रूप में
- सामाजिक मूल्य : व्यवहारों पर नियंत्रण से सम्बन्धित
- सामाजिक अन्तक्रियाएँ : सहयोगी तथा असहयोगी परिवर्तन की प्रक्रियाएँ

"मानव + समाज + सामाजिक समूह + सामाजिक मूल्य + सामाजिक अन्तक्रियाएँ = समाजशास्त्र"

प्रस्थिति एवं भूमिका

Date: / /
Page:

प्रस्थिति या पद का अर्थ एवं परिभाषा :-

1. दूसरे व्यक्तियों के सन्दर्भ में एक समाज या समूह के अन्दर व्यक्ति को जो स्थान या पद प्राप्त होता है, उसी को प्रस्थिति या पद कहा जाता है।

2. ऑगबर्न और निमकॉफ के शब्दों में प्रस्थिति की सबसे अधिक सरल परिभाषा यह है कि — "यह समूह में व्यक्ति के पद का प्रतिनिधित्व करती है।"

प्रस्थिति के प्रकार :-

(अ) प्रदत्त प्रस्थिति (ब) अर्जित प्रस्थिति

प्रदत्त प्रस्थिति :- जो स्थितियाँ व्यक्ति को अपने समाज से अपने आप बिना प्रयास के ही प्राप्त हो जाती है।

Ex:- लिंग, जाति, आयु, नातेदारी, समाज.

अर्जित प्रस्थिति :-

जिन पदों या प्रस्थितियों को व्यक्ति अपने व्यक्तिगत प्रयासों से प्राप्त करता है, उसे अर्जित प्रस्थिति कहा जाता है।

Ex- शिक्षा, योग्यता, कुशलता, डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक.

कार्ल - मार्क्स

संक्षिप्त जीवनी एवं कृतियाँ :-

5 मई, 1818 को प्रशिया के राइन प्रान्त में कार्ल मार्क्स का जन्म हुआ। बर्लिन विश्वविद्यालय से कानून की परीक्षा पास की। हीगल के विचारधारा से प्रभावित। एंजिल्स के साथ काम किया। 'कम्युनिस्ट घोषणा पत्र' इनकी अमर रचना है। 14 मार्च, 1883 को मृत्यु हो गई।

कृतियाँ :-

1.) दास कैपिटल
2.) कम्युनिस्ट घोषणा पत्र
3.) फ्रांस में वर्ग - संघर्ष

" ऐतिहासिक भौतिकवादी व्याख्या "

↓

① आदिम साम्यवाद ② दास युग ③ सामन्तवाद ④ पूँजीवाद ⑤ साम्यवाद

आदिम साम्यवाद :- समाज की प्रथम अवस्था है। इस युग में मनुष्य जंगलों में निवास करता था तथा जीवन - यापन के लिए कन्दमूल और जंगली फलों पर आश्रित था।

Date: / /
Page:

दास युग :- इतिहास द्वितीय अवस्था के रूप में दास युग का प्रादुर्भाव हुआ। सम्पूर्ण समाज में दास प्रथा का प्रचलन बढ़ने लगा। सम्पूर्ण समाज दो वर्गों में विभाजित हुआ :-

(1) मालिक
(2) दास

सामन्तवाद :- सामन्तवाद की दशा में भी समाज दो वर्गों का निर्माण हो गया :-

(1) जमीन्दार
(2) अर्द्ध - दास किसान

पूँजीवाद :- उत्पादन के साधनों के रूप में जब बड़ी - बड़ी मशीनों का उपयोग किया जाने लगा, तभी से पूँजीवादी युग का आरंभ हुआ। इस युग में उत्पादन के साधनों का स्वामित्व समाज के पूँजीपति वर्ग के हाथ में आ गया। इसके फलस्वरूप समाज पुनः दो वर्गों में विभाजित हो गया —

(1) बुर्जुआ वर्ग
(2) सर्वहारा वर्ग

साम्यवाद :- साम्यवाद से पूर्व के भौतिक इतिहास को आधार मानते हुए मार्क्स ने यह बतलाया कि

Date: / /
Page:

जब पूँजीवाद साम्यवाद के रूप में एक नया संश्लेषण सामने आयेगा। इस स्थिति में सर्वहारा वर्ग संगठित होकर उत्पादन के साधनों पर अपना अधिकार कर लेगा।

इस साम्यवादी समाज में कोई वर्ग-भेद नहीं होगा।

Date ___/___/___

सांस्कृतिक विलम्बना
(Cultural Lag)

अमरीकन समाजशास्त्री ऑगबर्न ने सांस्कृतिक विलम्बना या सांस्कृतिक पिछड़ापन की उपकल्पना के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन में सांस्कृतिक कारकों की भूमिका को समझाने का प्रयत्न किया है। अंग्रेजी के 'Lag' शब्द का अर्थ है- लगड़ाना या एक वस्तु का दूसरी से पीछे रह जाना अथवा एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ आगे बढ़ने में विलम्ब या देर करना। ऑगबर्न ने अपनी पुस्तक 'Social change' में 1922 में सामाजिक परिवर्तन के 'सांस्कृतिक विलम्बना' नामक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने संस्कृति को दो भागों में बाँटा - भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति। भौतिक संस्कृति के अन्तर्गत हजारों भौतिक वस्तुओं जैसे वायुयान, रेल, पंखा, घड़ी, बर्तन, फर्नीचर, वस्त्र, पुस्तकें आदि आते हैं जबकि अभौतिक में धर्म, कला, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, विश्वास, साहित्य आदि आते हैं। पिछले कुछ वर्षों में वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण भौतिक संस्कृति में बहुत परिवर्तन हुए हैं। इस कारण भौतिक संस्कृति आगे बढ़ गयी और उससे संबंधित या उस पर निर्भर अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन

की गति मन्द रही इस स्थिति को ही आगबर्न सांस्कृतिक पिछड़ापन कहते हैं।

सांस्कृतिक विलम्बना को स्पष्ट करते हुए फ्रेयरचाइल्ड लिखते हैं "संस्कृति के अन्तः सम्बन्धित अथवा अन्योन्याश्रित दो भागों के परिवर्तन की गति में समकालीनता के अभाव को 'सांस्कृतिक पिछड़ापन' कहा जायेगा।" इस परिभाषा से स्पष्ट है कि भौतिक संस्कृति का आगे बढ़ जाना व अभौतिक संस्कृति का पीछे रह जाना ही 'सांस्कृतिक पिछड़ापन या सांस्कृतिक विलम्बना' कहलाता है।

सांस्कृतिक विलम्बना के कारण

1) रूढ़िवादिता - लगभग सभी समाजों में लोगों में परम्परा एवं रूढ़ियों के प्रति लगाव पाया जाता है। नवीन भौतिक वस्तुओं को चाहे वे शीघ्र ही स्वीकार कर ले किन्तु परम्परा से चले आ रहे विश्वासों, रीति-रिवाजों, व्यवहारों, विचारों, मूल्यों और आदर्शों में नवीन परिवर्तनों को बहुत कम ही स्वीकार किया जाता है।

2) नवीनता के प्रति भय - मानव की यह प्रवृत्ति है कि वह नवीनता को एकदम

स्वीकार नहीं करता उसे शंका की दृष्टि से देखता है।

3) अतीत के प्रति निष्ठा - भौतिक संस्कृति की तुलना में अभौतिक संस्कृति में मन्द गति से परिवर्तन आने का एक कारण लोगों की अतीत के विचारों एवं परम्पराओं के प्रति निष्ठा भी है।

4) नवीन विचारों की जाँच में कठिनाई - सांस्कृतिक विलम्बना का एक कारण यह भी है कि समाज में आने वाले नवीन विचारों की परीक्षा कहाँ और कैसे की जाय।

5) परिवर्तन के प्रति विचारों में भिन्नता - समाज में परिवर्तन के प्रति विभिन्न लोगों की धारणा में भी अन्तर पाया जाता है। कुछ व्यक्ति परिवर्तनों का उत्साहपूर्वक स्वागत करते हैं, कुछ उनके प्रति उदासीन होते हैं तो कुछ उनका विरोध करते हैं।

6) संस्थाओं द्वारा परिवर्तन का विरोध - कई बार सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी नवीन परिवर्तनों का विरोध किया जाता है।

Date / /

निष्कर्ष - निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि भौतिक संस्कृति का आगे बढ़ जाना व अभौतिक संस्कृति का पीछे रह जाना ही 'सांस्कृतिक पिछड़ापन' या 'सांस्कृतिक विलम्बना' कहलाता है।

Date __/__/____

ऑगस्ट कॉम्ट की तीन स्तरीय नियम सिद्धान्त - (Law of Three Stages)

जीवन परिचय - ऑगस्ट कॉम्ट का जन्म 19 जनवरी 1798 ई. में फ्रांस के मॉण्टपेलियर नामक स्थान पर हुआ था। इनके माता - पिता कैथोलिक धर्म को मानने वाले थे। कॉम्ट का परिवार एक मध्यवर्गीय परिवार था। बचपन से ही कॉम्ट में दो गुण विकसित होने लगे थे - (1) वे प्रखर बुद्धि एवं प्रतिभा के धनी थे (2) वे समस्त स्थापित सत्ता के विरोधी थे।

कॉम्ट की प्रारंभिक शिक्षा - दीक्षा अपने ही नगर मॉण्टपेलियर में हुई। इसके बाद वे पेरिस के एक पॉलीटेक्निक स्कूल में अध्ययन हेतु चले गए। कॉम्ट का अध्ययन क्षमता एवं स्मृति अन्य छात्रों की अपेक्षा असाधारण थी। अपनी प्रखर बुद्धि एवं विलक्षणताओं के कारण वे विद्यार्थियों में बहुत ही लोकप्रिय हो गये।

समाजशास्त्र के जन्मदाता ऑगस्ट कॉम्ट की मृत्यु 5 सितम्बर 1857 में हुई किन्तु समाजशास्त्र के संस्थापक के रूप में वे सदैव अमर रहेंगे। क्योंकि वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने अपने कठिन परिश्रम से इस विज्ञान की नींव रखी।

Date __/__/__

कॉम्ट की कृतियाँ

कॉम्ट की कृतियाँ निम्नलिखित हैं:

1) A Prospectus of the Scientific Work Required for the Reorganization of Society, 1822

2) The Course of Positive Philosophy, 1830-42

3) System of Positive Polity, 1851-54

4) Catechism of Positivism, 1852

कॉम्ट की तीन स्तरीय नियम -

1) धार्मिक स्तर - धार्मिक स्तर समाज की प्राथमिक अवस्था थी जिसमें मानव प्रत्येक घटना को ईश्वर एवं धर्म के संदर्भ में समझने का प्रयत्न करता था। विश्व की समी क्रियाओं का आधार धर्म और ईश्वर को ही माना गया।

2) तात्विक स्तर - तात्विक स्तर में मानव घटनाओं की व्याख्या उनके गुणों के आधार पर करता था। इस अवस्था में मानव

Page No.

Date __/__/__

का अलौकिक शक्ति में विश्वास कम हुआ और प्राणियों में विद्यमान अमूर्त शक्ति को ही समस्त घटनाओं के लिए उत्तरदायी माना गया।

3) वैज्ञानिक स्तर - वैज्ञानिक स्तर में मानव सांसारिक घटनाओं की व्याख्या धर्म, ईश्वर एवं अलौकिक शक्ति के आधार पर नहीं करता वरन् वैज्ञानिक नियमों एवं तर्क के आधार पर करता है।

आलोचना - ब्रोगार्डस ने काम्ट के चिंतन की तीन अवस्थाओं की आलोचना की है। ब्रोगार्डस ने कहा कि चिंतन की चार अवस्थाएं हैं जिनमें केवल तीन का वर्णन ही काम्ट कर पाये, काम्ट ने चिंतन की चौथी अवस्था समाजीकृत अवस्था को छोड़ दिया है।

निष्कर्ष - कॉम्ट के चिंतन की तीन अवस्थाओं की चाहे जितनी आलोचना की जाय यह मानना ही पड़ेगा कि ज्ञान की प्रत्येक शाखा अपने वैज्ञानिक स्वरूप को प्राप्त करके करने तक आध्यात्मिक और तात्विक अवस्थाओं में से अनिवार्य रूप से गुजरती है।

Page No.